

विचार बिन्दु

दोष निकालना सुगम है, उसे अच्छा करना कठिन। –प्लूटार्क

सुखायु और हितायु का वैज्ञानिक प्रमाण-आधार

आयुर्वेद में दीर्घायु का अर्थ सुखकारी व हितकारी आयु है, सिर्फ लम्बा जीना नहीं। दीर्घायु का तात्पर्य उस आरोग्य से है जिसके रहते हम जीवन में वह सब प्राप्त कर पाते हैं, जो प्राप्त करना चाहते हैं। जिस विद्या में सुखकारी आयु और हितकारी आयु तथा दुःखकारी और अहितकारी आयु का विचार हो तथा इन सबके उचित मानदण्डों का अध्ययन हो वह आयुर्वेद कहलाता है। स्वास्थ्य–रक्षण के द्वारा निरोगी बने रहना उपयोगी है, क्योंकि आरोग्य के बिना धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष कुछ नहीं मिल सकता। यदि व्यक्ति स्वस्थ नहीं है या बीमारियों को रोक नहीं पाये, तो ना तो वह अपनी मूल प्रकृति के अनुसार कुछ धारण कर सकता है, ना ही धन कमा सकता है, ना ही खाने–पीने, सोने या जीवन का कोई आनन्द ले सकता है, और ना ही शक्तिपूर्वक संसार से विदा हो सकता है। अतः भौतिकतावादी युग में भी स्वास्थ्य से बढ़कर कुछ भी नहीं है। आयुर्वेद के 8 अंगों में काय–चिकित्सा, शल्य चिकित्सा, शालाक्य, भूतविद्या (मनोचिकित्सा), कौमारभृत्य, अगदतंत्र, रसायन तथा वाजीकरण है। आयुर्वेद के दो मूल उद्देश्यों में प्रथम स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा है और दूसरा आतुर या बीमार के विकारों का प्रशमन या बीमारियों को चिकित्सा है। यहाँ स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा के संदर्भ में कुछ मूल सिद्धान्त, दर्शन या विवेचन हैं। इस चर्चा का महत्व यह है कि संहिताओं, वैज्ञानिक अध्ययनों, और अनुभवजन्य ज्ञान से प्राप्त प्रमाण हमें इस बात से आश्चस्त करने के लिये उपयोगी रहेंगे कि वर्तमान जनजीवन को स्वस्थ रखने के लिये संहिताओं, साईंस, तथा अनुभवजन्य–ज्ञान में प्रमाण–आधार सुदृढ़ है। जहाँ तक सिद्धान्तों की समताता का प्रश्न है, आयुर्वेद में स्वास्थ्य–रक्षण एवं चिकित्सा से जुड़े मूल सिद्धान्तों और निर्देशों की संख्या बहुत अधिक है। तर्भाषा, कुछ सिद्धान्त और निर्देश जो स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा के संदर्भ में प्रत्यक्ष रूप से लागू होते हैं, उनमें से कुछ प्रमुख हैं:– 1. सामान्य–विशेष, 2. गुण–कर्म, 3, त्रिदंड, 4. त्रिविध–हेतु, 5. त्रिदोष, 6. षड्स, 7. पंचकर्म, 8. आहार मात्रा, 9. हिताहितसंजनसंक्रम, 10. आदान–विशर्ग, 11. स्वस्थवृत्त, 12–धातुणीय–अधातुणीय वेग, 13. सद्ग्त, 14. अन्नपान–विधि, 15. धातु–पोषण, 16. आहार विधिविशेषाधयतन, 17. आहार विधिविधान, 18. त्रिविध कुक्षीय, 19. रसायन, 20. जनपदोद्देश आदि प्रमुख हैं। वस्तुतः इनमें से प्रत्येक के अंतर्गत, विचार–विमर्श में दिनचर्या, रात्रिचर्या, ऋतुचर्या सहित, अनेक विस्तृत विषय समाहित हैं जिन पर विस्तृत चर्चा आगे यथासमय होगी।

यहाँ एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह उठता है कि आयुर्वेद की संहिताओं में उपरोक्त समस्त सिद्धान्तों का वर्णन तथा प्रयोग में लाये जाने की विधियाँ और उनकी उपयोगिता काविवेचन उपलब्ध है, परंतु आज समकालीन वैज्ञानिक युग में यह मानने का प्रमाण क्या है कि उक्त सलाह विज्ञान–सम्मत ही है। इस प्रश्न का उत्तर कई स्रोतों से दिया जा सकता है, जिनमें देश–विदेश के आयुर्वेदाचार्यों द्वारा की गई शोध से प्राप्त प्रमाण, आयुर्वेद का संदर्भ दिये बिना भी समान विषयों में विश्वभर में हुई शोध के निष्कर्षों का प्रमाण, और आयुर्वेदाचार्यों का अनुभवजन्य ज्ञान शामिल है।

प्राचीन ग्रंथों के विपुल भण्डार की उपलब्धता के बावजूद आज हमें आधुनिक विज्ञान की ओर देखने की आवश्यकता क्यों पड़ रही है। दरअसल, वर्ष 2010 के अनुमान बताते हैं कि लगभग 15 लाख शोध–पत्र प्रति वर्ष विश्व की महत्वपूर्ण शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हो रहे थे। सभी प्रकार के जर्नलस को लें तो मैक्स प्लैंक सोसायटी और स्विस् फेडरल इंस्टीटयूट ऑफ टेक्नोलॉजी, ज्यूरिच में कार्यरत वैज्ञानिक लुत्जबर्नमान के अनुमान बताते हैं कि ज्ञान में वृद्धि की दर इतनी है कि अब विश्व का साइंटिफिक आउटपुट हर 9 साल में दोगुना हो रहा है। वर्ष 1600 के मध्य से वर्ष 2012 तक ज्ञान के उत्पादन को तीन चरणों में देखा जा सकता है। प्रत्येक चरण में पिछले चरण की तुलना में ज्ञान उत्पादन में तीन गुना वृद्धि पायी गयी है। प्रथम चरण, 16वीं शताब्दी के मध्य से 18वीं शताब्दी के मध्य तक, ज्ञान उत्पादन में वृद्धि की दर लगभग एक प्रतिशत थी। उसके बाद दो विश्वयुद्धों के मध्यवर्ती काल में 2 से 3 प्रतिशत, तथा अंतिम विश्वयुद्ध के बाद से लेकर वर्ष 2012 तक यह वृद्धि दर 8 से 9 प्रतिशत रही।

आज विश्व के अनेक डाटाबेस जैसे स्कोपस, वेब ऑफ नॉलेज और गूगल स्कॉलर आदि में सभी विषयों के कुल 4 से 5 करोड़ शोध पत्रों का भण्डार है। आयुर्वेद में भी नये ज्ञान का उत्पादन हो रहा हैवर्ष 1923 से 2022 के दौरान प्रकाशित कुल 46,616 शोधपत्रों में कहीं न कहीं आयुर्वेद का उल्लेख हुआ है। इनमें से 12,906 शोधपत्र विशेषकर आयुर्वेद पर केंद्रित हैं। पिछले दो दशकों के दौरान भारत के कई दिग्गज वैज्ञानिकों और आयुर्वेदाचार्यों की शोध ने आयुर्वेद का प्रमाण–आधार बहुत मजबूत किया है। आयुर्वैदिक बायोलॉजी, आयुर्वैदिक जैमोमिक्स, समटा–पद्धति या होल–सिस्टम क्लिनिकल ट्रायल्स आदि में उपयोगी कार्य हुआ है।

यहाँ कुछ उदाहरण उपयोगी होंगे। स्कोपस डेटाबेस, जो शोध–पत्रिकाओं में प्रकाशित उच्च कोटि के शोधपत्रों का विश्व में सबसे बड़े डेटाबेस में से एक है, में अकेले शहद पर ही 250 से अधिक क्वीनिकल ट्रायल्स सहित विभिन्न पहलुओं पर 38,000 से अधिक शोधपत्र प्रकाशित हो चुके हैं। शहद पर आयुर्वेद का कथन मधु श्रेष्मत्पत्रप्रशमनानाम् (च.सू. 25.40) को देखने पर ज्ञात होता है कि मूलतः आयुर्वेद के इस द्रव्य पर आयुर्वेद के सन्दर्भ सहित 122शोधपत्र हैं, जबकि विश्व भर में शहद पर 38,000 से अधिक शोधपत्र प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें से 2900 से अधिक शोधपत्र शहद के औषधीय गुणों पर, व 8,000 से अधिक भोजन के रूप में शहद की उपयोगिता सिद्ध करते हैं।

एक मेटा-एनलिसिस बिलकुल साफ़ कर देती है कि व्यायाम करना आवश्यक है भले ही तीव्रता कम या ज्यादा कुछ भी हो। रोचक बात यह है कि आयुर्वेद व्यायाम की तीव्रता की बात नहीं करता बल्कि व्यायाम की अनिवार्यता की बात करता है और बल के आधे तक प्रतिदिन व्यायाम करने की सलाह देता है। आयुर्वेद चलने (चंद्रमण) की भी सलाह देता है किन्तु चंद्रमण ऐसा हो जो अति-पीड़ादायक नहीं होना चाहिये।

हिपेटोप्रोटोटेक्टिव, कार्डियोप्रोटेक्टिव, एंटीइन्फ्लेमेटोरी, एंटीडायबिटीज, एवं इम्यूनोमोड्युलेटरी पाया है। वर्ष 2016 में विश्व–प्रसिद्ध शोध पत्रिका लैंसेट में 10 लाख से अधिक लोगों के संदर्भ में एकत्र आँकड़ों के आधार पर प्रकाशित एक मेटाएनलिसिस से ज्ञात होता है कि प्रायः कुर्सी में बैठे–बैटे काम करने वाले लोग यदि रोजाना 60 से 75 मिनट व्यायाम करें तो उनके असमय मरने का जोखिम कम हो जाता है। बात यदि मोटापा प्रबंध के सन्दर्भ में की जाये, तो समुचित खापान के साथ ही सप्ताह में कम से कम 150 मिनट का व्यायाम लाभकारी है। मेटा–एनलिसिस के परिणाम स्पष्ट करते हैं कि व्यायाम से प्रसन्नता मिलती है। एक अन्य मेटा–एनलिसिस के परिणाम बताते हैं कि हरियाली और जलाशयों के पास व्यायाम मन को प्रसन्न रखता है। वस्तुतः व्यायाम त्रिदोषशामक है और इसके कारण विश्व में सालाना 3.9 मिलियन मौतें टल जाती हैं। एक अन्य मेटा–एनलिसिस से ज्ञात होता है कि प्राकृतिक वन और उपवन में व्यायाम न केवल मानसिक बल्कि शारीरिक स्वास्थ्य भी प्रदान करता है। एक मेटा–एनलिसिस बिलकुल साफ़ कर देती है कि व्यायाम करना आवश्यक है भले ही तीव्रता कम या ज्यादा कुछ भी हो। रोचक बात यह है कि आयुर्वेद व्यायाम की तीव्रता का बात नहीं करता बल्कि व्यायाम की अनिवार्यता की बात करता है और बल के आधे तक प्रतिदिन व्यायाम करने की सलाह देता है। आयुर्वेद चलने (चंद्रमण) की भी सलाह देता है किन्तु चंद्रमण ऐसा हो जो अति–पीड़ादायक नहीं होना चाहिये। व्यायाम और चंद्रमण ना तो बलार्थ से अधिक हो और ना ही पीड़ादायक हो, अन्यथा हानिकारक होता है। आयुर्वेद और समकालीन विज्ञान यहाँ एक जैसी सलाह के समीप आते दृष्टिगोचर होते हैं। एक अन्य अध्ययन के अनुसार, उम्रदराज लोगों में पांच वर्ष तक चले क्लिनिकल ट्रायल में व्यायाम की 'तीव्रता' व 'मृत्यु–दर' के बीच सम्बन्ध नहीं मिला। इसलिये 'तीव्रता' के चक्कर में पड़ने के बजाय अपने बल के आधे तक व्यायाम करते रहिये। समय की बात करें तो 30 मिनट प्रतिदिन से कम व्यायाम नहीं रहना चाहिये। सप्ताह में व्यायाम करते समय अगर 120 मिनट गर्डेन, पार्क या हरियाली वाली जगह में बिताया जाये तो व्यायाम का मानसिक स्वास्थ्य पर घनात्मक प्रभाव और भी बेहतर रहता है।

तीन सूर जो दवाई की आवश्यकता कम कर देते हैं, उनमें कालभोजन, व्यायाम औरसत्वावजय प्रमुख है। कैलोरी व कदम गिाने की सनक आयुर्वेद का विषय नहीं। काल–भोजन और बलार्थ–व्यायाम कीजिये: ऊर्जस्प्रक्रमण नातिनिष्ठानास्ति आयुर्वेदविषयः। समाचरेत्काल भोजनंबलस्यार्थव्यायामश्च। मोटापा की समस्या देखें तो यह गोलियां खाने से नहीं छंटता। आचार्य चरक कहते हैं कि मोटापा छोटने के लिये भोजन की मात्रा घटाने से उत्तम और कुछ नहीं है। आचार्य सुश्रुत कहते हैं इस काम के लिए व्यायाम से बेहतर कुछ नहीं है। दोनों मिलकर तो मोटापा कम कर ही सकते हैं। बात साधारण है: हितकारी भोजन मात्रापूर्वक नियतकाल में दिन में केवल दो बार लीजिए और नित्य व्यायाम कीजिए। बस इस ज्ञान को काम से जोड़ने का पचड़ा है!

यही स्थिति सद्गु्त में समाहित विविध विषयों की है। शोध–पत्रिकाओं में प्रकाशित लगभग 2 लाख शोधपत्र ऐसे हैं जहाँ मंगलकार्य, त्याग, उपहार, हवन, नियम, प्रायश्चित, उपवास, सस्वर पाठ, आध्यात्मिक लाभान, तीर्थटन, क्षमा, दान आदि विषयों तथा इनका स्वास्थ्य रक्षण एवं रोगमुक्ति के संदर्भ में विश्लेषण है। योग के यम और नियम में भी सद्गु्त के ही विविध विषय समाहित हैं। इन पर 25,000से अधिक शोधपत्र प्रकाशित हो चुके हैं।

दिनचर्या, रात्रिचर्या, ऋतुचर्या के रूप में समाहित विविध विषयों में पृथक पृथक शोध भी है। इनमें सबसे अधिक वैज्ञानिक शोध भोजन, भोजन द्रव्य, नस्य, पंचकर्म, मुख–स्वास्थ्य, कवल–गंडुष, अप्यंग, मौसमी बीमारियों से बचाव, व्यायाम, पर्सनल–हाइजीन आदि पर उपलब्ध है। सारांश यह है कि भले ही शोध आयुर्वेद का नाम लेकर न की गई हो, लेकिन आहार स्वस्थवृत्त, सद्गु्त, रसायन एवं पंचकर्म आदि में समाहित प्रयोगों एवं परिणामों को आधुनिक शोध के प्रकाश में देखने पर इस बात के निर्विवाद प्रमाण मिलते हैं कि आयुर्वेद के माध्यम से स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा संभव है।

इस सब चर्चा का हमारे लिये महत्व क्या है? मुख्य रूप से संहिताओं, साईंस एवं आयुर्वेदाचार्यों का अनुभवजन्य ज्ञान निर्विवाद रूप से सिद्ध करता है कि यदि कोई व्यक्ति आज कैसर, डायबिटीज, हृदय रोग, मनोरोग या श्वसन तंत्र जैसी गैर–संचारी बीमारियों से पीडित नहीं है तो वह इन बीमारियों से आगे भी अपने आपको बचाये रख सकता है, बशर्ते आयुर्वेद की सलाह मानकर अपने जीवन में इस ज्ञान का उपयोग करें। हाँ, आयुर्वेद में स्वास्थ्य–रक्षण के सिद्धान्त और उन सिद्धान्तों का क्रियावन्धन योग्य आयुर्वेदाचार्यों की सलाह से ही किया जाना चाहिये ताकि समुचित परिणाम प्राप्त हो सकें। आयुर्वेद में लगभग 300 प्रकार की सलाह केवल सद्गु्त में ही उपलब्ध हैं, और समकालीन वैज्ञानिक शोध में उन्ही विषयों पर 7 लाख से अधिक शोधपत्र प्रकाशित हो चुके हैं। शोध में उपलब्ध प्रमाणों के इस संक्षिप्त वर्णन, जो आयुर्वेद के समकालीन वैज्ञानिकता को दर्शित करता है, के बाद आगे यथासमय यहाँ प्रत्येक विषय पर पृथक–पृथक चर्चा तथा उपयोग–योग्य ज्ञान प्रस्तुत किया जाता रहेगा होगा।

–अतिथि सम्पादक, डॉ. दीप नारायण पाण्डेय (इंडियन फारेस्ट सर्विस से सेवानिवृत्त, वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान सहित अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर) (यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित है।)



सीए अंशुल चित्तौड़ा

केंद्र सरकार का बजट आगामी माह में पेश किया जाने वाला है। जैसे–जैसे भारत विकसित भारत 2047 के लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है, आगामी केंद्रीय बजट 2026 से देश के करदाताओं और उद्योगों को भारी उम्मीदें हैं। कराधान एवं कॉर्पोरेट मामलों के विशेषज्ञ सीए अंशुल

होगा। इससे न केवल मुकदमों में कमी आएगी, बल्कि कर प्रशासन में भी सुगमता होगी।

2. **पार्टनरशिप फर्म और एलएलपीएस के लिए कर समानता** : –वर्तमान टैक्स ढांचे में एक बड़ी विसंगति यह है कि जहाँ घरेलू कंपनियों के लिए 15 प्रतिशत से 22 प्रतिशत की रियायती दरें मौजूद हैं, वहीं पार्टनरशिप फर्म और एलएलपी आज भी 30 प्रतिशत की फ्लैट दर से कर दे रहे हैं। यह असमानता छोटे और मध्यम स्तर के उद्यमियों (एमएसएमएस) पर भारी वित्तीय बोझ डालती है। बजट 2026 में इन संस्थाओं के लिए भी रियायती कर व्यवस्था की घोषणा होगी चाहिए, ताकि उन्हें कॉर्पोरेट संस्थाओं के समकक्ष लाया जा सके।

3. **मैयूफैक्चरिंग और एमएसएमएड को प्रोत्साहन** : –मेक इन इंडिया को मजबूती देने के लिए नई मैयूफैक्चरिंग इकाइयों को मिलने

वाली 15 प्रतिशत की रियायती कॉर्पोरेट टैक्स दर की समय सीमा को बढ़ाकर मार्च 2027 करना अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त, एमएसएमएड को भुगतान से संबंधित प्रावधानों (धारा 43) में उद्योग–वार व्यावहारिक लचीलापन देने की आवश्यकता है, ताकि व्यापारिक चक्र और गुणवत्ता संबंधी विवादों का समाधान सुचारु रूप से हो सके।

4. **अनुसंधान (आरएनडी) और एआइ पर विशेष ध्यान** : –भारत को वैश्विक एआई हब बनाने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रोबोटिक्स और ग्रीन एनर्जी क्षेत्र में काम करने वाली कंपनियों के लिए विशेष टैक्स क्रेडिट या वेटेड डिडक्शन की वापसी होगी चाहिए। नवाचार पर निवेश करने वाली संस्थाओं को प्रोत्साहन देने से न केवल रोजगार बढ़ेगा, बल्कि भारत संरक्षणवाद के दौर में वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बना रहेगा।

5. **टीडीएस/टीसीएस और**

सीमा शुल्क में सुधार:– वर्तमान में टीडीएस/टीसीएस की जटिल दरें व्यापार की कार्यशील पूंजी को बाधित करती हैं। इसे सरल बनाकर केवल 3 या 4 व्यापक श्रेणियों में सीमित करना चाहिए। साथ ही, सीमा शुल्क में जीएसटी की तर्ज पर सुधार और लंबित विवादों के लिए एक एमनेस्टी योजना व्यापारिक दक्षता को बढ़ाएगी। इससे लॉजिस्टिक्स लागत में कमी आएगी और घरेलू सामान वैश्विक बाजार में अधिक प्रतिस्पर्धी बनेगा।

निष्कर्ष : –बजट 2026 का मूल मंत्र “न्यूनतम सरकार, अधिकतम शासन” और ‘विश्वास’ होना चाहिए। सीए अंशुल चित्तौड़ा का मानना ​​है कि यदि सरकार इन संरचनात्मक सुधारों को अपनाती है, तो यह न केवल ईज ऑफ़ डूइंग बिजनेस बढ़ाएगा, बल्कि भारत की अर्थव्यवस्था को एक नई गति प्रदान करेगा।

–सीए अंशुल चित्तौड़ा

‘कृष्णा लिम्ब’ और बीकानेर के सपूत डॉ. तपेश माथुर की सेवा–साधना

डॉ. तपेश माथुर, जिन्होंने पशु-पक्षियों की मूक पीड़ा को समझकर उसे केवल महसूस ही नहीं किया, बल्कि विज्ञान की सहायता से उसका समाधान भी प्रस्तुत किया



हेमन्त चंडीदान उज्जवल

समाज में कभी–कभी ऐसे व्यक्तित्व जन्म लेते हैं, जिनके लिए विज्ञान केवल ज्ञान नहीं, बल्कि करुणा

का माध्यम बन जाता है। ऐसे ही एक नाम हैं डॉ. तपेश माथुर, जिन्होंने पशु–पक्षियों की मूक पीड़ा को समझकर उसे केवल महसूस ही नहीं किया, बल्कि विज्ञान की सहायता से उसका समाधान भी प्रस्तुत किया। उनके जीवन और कार्यों का सबसे उज्ज्वल प्रतीक है – ‘कृष्णा लिम्ब’।

‘कृष्णा लिम्ब’ कोई साधारण कुत्रिम अंग नहीं, बल्कि उस संवेदना का प्रतिरूप है, जिसने विकलांग पशुओं को फिर से चलना सिखाया। यह भारत में पशुओं पर किया गया पहला सफल प्रोस्थेटिक प्रयोग माना जाता है। जिन गायों और पालतू पशुओं के लिए जीवन ठहर–सा गया था, उन्हें ‘कृष्णा लिम्ब’ ने नई गति दी, नई आशा दी।

जो चल नहीं सकते थे,



उन्हें फिर राह मिल गई।

डॉ. तपेश माथुर का जन्म 16 जनवरी 1971 को बीकानेर में हुआ। उन्होंने राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर से बी.वी.एस.सी. एवं ए.एच. की उपाधि प्राप्त की। बोते 27 वर्षों से अधिक समय से वे टाामीण एवं शहरी पशु चिकित्सालयों में सेवाएँ देते हुए पशु कल्याण को अपने जीवन का उद्देश्य बनाए हुए हैं। वर्तमान में वे राजस्थान सरकार के पशुपालन निदेशालय में संयुक्त निदेशक के पद पर कार्यरत हैं।

परंतु उनका वास्तविक परिचय पदों से नहीं, बल्कि कृष्णा लिम्ब जैसी करुणा–प्रेरित खोजों से बनता है।

डॉ. माथुर ने जब पहली बार एक विकलांग गाय को असहाय अवस्था में देखा, तब उन्होंने यह महसूस किया कि चिकित्सा केवल दवाओं तक सीमित नहीं हो सकती। वहीं से ‘कृष्णा लिम्ब’ का विचार जन्मा–एक ऐसा कुत्रिम अंग जो ग्रामीण परिस्थितियों में भी उपयोगी हो, सस्ता हो, टिकाऊ हो और पशु के शरीर के अनुकूल हो। यह प्रयोग न केवल तकनीकी रूप से सफल रहा, बल्कि मानवीय दृष्टि से क्रांतिकारी सिद्ध हुआ।

यह नवाचार क्षेत्रीय स्तर पर सफल होने के बाद वैज्ञानिक और शैक्षणिक मंचों पर भी सराहा गया। ‘कृष्णा लिम्ब’ आज इस बात का उदाहरण है कि यदि विज्ञान को करुणा की दिशा मिले, तो वह केवल शोध नहीं, बल्कि जीवन रक्षक बन जाता है। **जहाँ शब्द मौन हो जाते हैं, वहीं करुणा उपचार बन जाती है।**

डॉ. तपेश माथुर की सेवा–साधना यहीं समाप्त नहीं होती। उन्होंने यूनिनोटोमी शल्य क्रियाओं में विशेष दक्षता प्राप्त कर गंधीर रूप से बीमार गायों के पेट से प्लास्टिक और अन्य बाहरी पदार्थ निकालने में उल्लेखनीय योगदान दिया। मात्र दो वर्षों में 350 से अधिक सफल ऑपरेशनों के माध्यम से उन्होंने न केवल सैकड़ों पशुओं की जान बचाई, बल्कि उनसे जुड़े अनेक पशुपालक परिवारों की आजीविका को भी सुरक्षित किया।

उनका मानना ​​है कि पशु चिकित्सा केवल इलाज नहीं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ को मजबूत करने का कार्य भी है।



डॉ. माथुर ने राजस्थान राज्य गौ सेवा आयोग में सचिव के रूप में रहते हुए अनेक नवाचारी योजनाओं की शुरुआत की, जिससे आयोग को राष्ट्रीय पहचान और आत्मनिर्भरता मिली। वे राजस्थान सरकार की निःशुल्क पशु औषधि योजना के भी प्रमुख सूत्रधार रहे, जिससे लाखों पशुपालकों को सीधा लाभ पहुँचा।

पशुओं के साथ–साथ पक्षियों के प्रति भी उनकी संवेदना उत्तनी ही गहरी है। वे ‘सेव बड्स’ अभियान के प्रमुख संरक्षक हैं, जो घायल पक्षियों के उपचार, परिंडे लगाने और जन–जागरूकता के माध्यम से सह–अस्तित्व की भावना को मजबूत करता है।

जो बोल नहीं सकते, उनके लिए बोलना ही सच्ची सेवा है।

डॉ. तपेश माथुर के कार्यों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापक सराहना मिली है। उन्हें भारतीय पशु चिकित्सा शल्य चिकित्सा सोसायटी का स्वर्ण पदक (2014),

एम.आर. पटेल पुरस्कार (2015), वर्ल्ड वेटेरनरी एसोसिएशन का कांस्य पदक (2018–19) तथा लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड (2020) सहित अनेक सम्मान प्राप्त हुए।

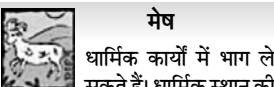
वर्ष 2024 में राजस्थान राज्य स्तरीय पुरस्कार उन्हें माननीय मुख्यमंत्री के कारकमलों से प्रदान किया गया। वर्ष 2025 में टाइम्स नाउ अमेज़िंग इंडियन अवार्ड से सम्मानित किया जाना उनके नवाचारी और मानवीय कार्यों की राष्ट्रीय स्वीकृति है। वे (भारत सरकार) के प्रथम पशु चिकित्सक सदस्य भी रहे हैं।

करुणा जो पद से बड़ी है डॉ. तपेश माथुर का जीवन यह सिद्ध करता है कि जब विज्ञान को संवेदना का मार्गदर्शन मिले, तब वह केवल तकनीक नहीं रहता–वह जीवन बन जाता है। ‘कृष्णा लिम्ब’ इसी सत्य का जीवंत उदाहरण है।

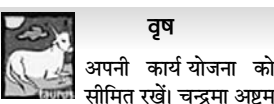
पद बदलते हैं, पर करुणा नहीं।

–हेमन्त चंडीदान उज्जवल,

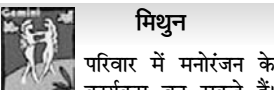
वाशिष्ठ लेखक



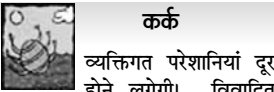
मेघ धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटक के कार्य बनने लगेंगे।



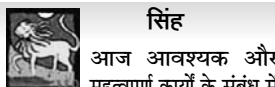
वृष अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।



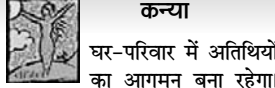
मिथुन परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आज परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।



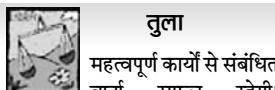
कर्क व्यक्तिगत परेशानियां दूर होने लगेंगी। विवादित मामलों से दूरी मिल सकती है। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। परिवार में आपसी सहयोग बना रहेगा।



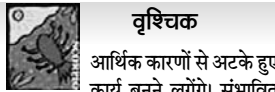
सिंह आज आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। खान–पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।



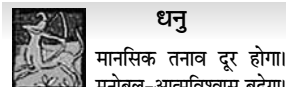
कन्या घर–परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



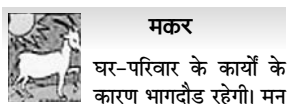
तुला महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित बातें सफल रहेगी। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। घर–परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।



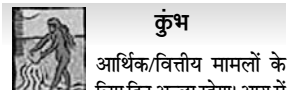
वृश्चिक आर्थिक कारणों से अटक हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित खोत से बच प्राप्त हो सकता है। आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। आज नये–पुराने मित्रों से मनोरंजन होगा।



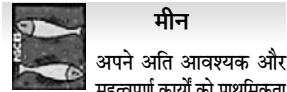
धनु मानसिक तनाव दूर होगा। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।



मकर घर–परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।



कुंभ आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित खोत से बच प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।



मीन अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से कलने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्यों में रूचित सफलता मिल सकती है। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।